अध्याय
07

ब्रिटिश काल में शिक्षा

प्राचीनकाल में भारत के तक्षशिला नालन्दा और वल्लभी जैसे विश्वविख्यात शिक्षा के केन्द्र थे, जहाँ कई देशों से लोग पढ़ने के लिये आते थे। मध्यकाल में आक्रांताओं द्वारा कुछ प्राचीन शिक्षा केन्द्रों को जलाकर नष्ट किया गया, इसके बावजूद मदरसों और पाठशालाओं के माध्यम से इस काल में अच्छी शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजों ने इस गौरवमयी भारतीय शिक्षा-व्यवस्था को काफी नुकसान पहुँचाया। उनकी औपनिवेशिक नीतियों की वजह से भारतीय शिक्षा कमजोर हुई और परिणामत: लोगों को बेहतर शिक्षा के लिये भारत से बाहर जाना पड़ता था।

आंग्ल-प्राच्य विचार—

ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन के प्रारम्भ में, अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में विशेष ध्यान नहीं दिया। लेकिन एच. डी. प्रिंसेप, विलियम जोन्स और हेनरी टॉमस कोलब्रुक जैसे कुछ प्राच्य विचारधारा से प्रभावित लोग भारतीय शिक्षा एवं ज्ञान-विज्ञान के उन्नयन का प्रयास करते दिखे। इन्होंने देशी शिक्षण संस्थाओं की सुरक्षा की माँग भी की। ये भारत को समझने के लिये धार्मिक और कानूनी ग्रन्थों को पढ़ने और उसका अंग्रेजी में अनुवाद करने लगे। इस कार्य के लिये उन्होंने 1784 ई. में एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना की। इस संस्था के द्वारा भगवदगीता, मनुस्मृति दिनोपदेश तथा कालिदास रचित अभिज्ञानशाकुंतलम्, विष्णु शर्मा रचित पंचतंत्र का अंग्रेजी अनुवाद किया गया। 1781 ई. में वारेन हेंस्टिस द्वारा कलकत्ता में एक मदरसा खोला गया, जबकि 1791 ई. में जोनाथन डंकन ने बनारस में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की।

© JCERT not to be republished

कई भाषाओं के ज्ञाता विलियम जोन्स

1783 ई. में जूनियर जज के पद पर नियुक्त विलियम जोन्स कई भाषाओं के जानकार थे। वे फ्रेंच और अंग्रेजी जैसे यूरोपीय भाषा के अलावा अरबी, फारसी और संस्कृत जैसे भाषाओं के भी जानकार थे। उन्होंने कानून, दर्शन धर्म, राजनीति जैसे विविध विषयों से संबंधित भारतीय पुस्तकों का गहरा अध्ययन किया। भारतीय पुस्तकों के अध्ययन और उसके अंग्रेजी अनुवाद के लिये विलियम जोन्स ने टॉमस कोलब्रूक और नैथॉनियल हॉलटेढ के साथ मिलकर एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल का गठन किया और एशियाटिक रिसर्च नामक शोध पत्रिका भी निकाली।

इस प्राच्यवादी विचारधारा के विपरीत मुनरों, एफफिन्स्टन और मैकाले जैसे लोग आंग्लवादी विचारों के समर्थक थे। इस दल को कम्पनी के युवा अधिकारियों एवं मिशनरियों का भी समर्थन मिला हुआ था। आंग्लवादी, अंग्रेजी भाषा के माध्यम से भारत में पाश्चात्य शिक्षा का प्रचार-प्रसार कर, अंग्रेजी जानने वाले भारतीय कर्मचारियों की कमी को दूर करना चाहते थे। मैकाले अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा भारत में एक ऐसे समूह का निर्माण करना चाहते थे। जो रंग एवं खून से तो भारतीय हो पर विचारों, रूचि एवं बुद्धि से अंग्रेज हों। ताकि ब्रिटिश सत्ता को स्थायी बनाया जा सके। ये भारतीय शिक्षा को अव्यावहारिक और अवैज्ञानिक मानते थे।

आंग्लाविदों के प्रभाव से ही 1835 ई. में शिक्षा अधिनियम पारित किया गया तथा 1 लाख रूपये की राशि पश्चिमी शिक्षा पर खर्च की जाने लगी, जिसका प्रावधान 1813 ई. के चार्टर अधिनियम में किया गया था। इसी नीति के तहत छोटानागपुर के कमिश्नर जे. आर. ओसले द्वारा राँची जिला स्कूल की स्थापना 1839 ई. में की गई।

(मैकाले—''यूरोप के एक अच्छे पुस्तकालय की एक आलमारी का तख्ता भारत और अरब के समस्त साहित्य से अधिक मूल्यवान है।'')

इसाई मिशनरियों ने भी पाश्चात्य शिक्षा के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया। विलियम कैरी ने कलकत्ता के निकट सेरामपुर में सेरामपुर मिशन खोला। इस मिशन के द्वारा एक प्रिंटिंग प्रेस तथा सेरामपुर कॉलेज की स्थापना की गई। विलियम कैरी ने 'न्यू टेस्टामेंट' का बंगला भाषा में अनुवाद कर छपवाया। बंगाली भाषा में छपने वाली यह पहली पुस्तक बनी।

(पता लगाइए कि भारत में मुद्रित पहली पुस्तक कौन-सी भाषा में थी ?)

व्यवसाय के लिए शिक्षा-वुडस डिस्पैच—

सर चार्ल्स वुड ईस्ट इंडिया कम्पनी के नियंत्रक मण्डल के अध्यक्ष थे। उन्होंने 1854 ई. में शिक्षा संबंधी एक विस्तृत नीतिपत्र तैयार किया, जिसे 'वुडस डिस्पैच' कहा जाता है। इसे 'भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा' के उपनाम से भी जाना जाता है। इसमें प्राथमिक पाठशाला से लेकर विश्वविद्यालयी शिक्षा, व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा और महिलाओं की शिक्षा - सभी के लिये प्रस्ताव थे। चार्ल्स वुड शिक्षा के द्वारा भारतीयों को परिवर्तित कर विदेशी वस्तुओं का खरीददार बनाना चाहते थे। साथ ही कम्पनी के भरोसेमंद और ईमानदार कर्मचारियों की कमी को पूरा करना चाहते थे। अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिये अंग्रेजों ने 1855 ई. में लोक शिक्षा विभाग की स्थापना की तथा 1857 ई. में तीनों प्रेसीडेन्सियों - कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालय खोले।

© JCERT not to be republished

(पता लगाइये कि विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय में क्या अन्तर है ?)

अंग्रेजी शिक्षा और भारतीय—

अंग्रेजी शिक्षा पर सभी भारतीयों की एक समान प्रतिक्रिया नहीं थी। राजा राममोहन राय जैसे कुछ लोगों ने प्रभावशाली तरीके से युरोपीय शिक्षा के अध्ययन की वकालत की। वे पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के द्वारा भारत का आधुनिकीकरण करना चाहते थे। जबकि दयानन्द सरस्वती पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ भारतीय-ज्ञान एवं दर्शन की सर्वोच्चता में भी विश्वास रखते थे। उनका प्रमुख वाक्य था - वेदों की ओर लौटो''। स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित लाला हंसराज ने 1886 में सबसे पहले लाहौर में दयानन्द एंग्लो-वैदिक (D.A.V.) की स्थापना की। धीरे-धीरे इसकी शाखाएँ पूरे देश में खुल गई। स्वदेशी आंदोलन (1906 ई.) के दौरान राष्ट्रीय महाविद्यालयों की स्थापना भी पूरे देश भर में हुई।

बीसवीं सदी में कई भारतीयों ने पश्चिमी शिक्षा का पुरजोर विरोध किया, इनमें महात्मा गाँधी और रवीन्द्र नाथ टैगोर प्रमुख थे। गाँधी जी मानते थे कि अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा हम अपनी भाषा और संस्कृति से दूर होकर पश्चिमी सभ्यता, अंग्रेजी भाषा और उनकी संस्कृति को श्रेष्ठ मानने लगेंगे। इससे हम भारतीयों के मन में हीनता का भाव पैदा होती है। इसलिए उन्होंने छात्रों को अंग्रेजी संस्थाओं का बहिष्कार करने के लिये कहा। गाँधी जी शिक्षा के द्वारा मानव का सर्वांगीण विकास करना चाहते थे। वे केवल पढ़ने-लिखने को शिक्षा का मापदण्ड नहीं मानते थे। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को कोई-न-कोई हस्तकला अवश्य आनी चाहिए। 1937 ई. में गाँधी जी ने शिक्षा की वर्धा योजना तैयार की। इस योजना का मूलभूत सिद्धान्त हस्त-उत्पादक कार्य था। इसके अंतर्गत विद्यार्थी को सात वर्ष तक अपनी भाषा में विद्याध्ययन करना था।

गाँधी जी के अनमोल वचन

- शिक्षा से मेरा मतलब इस बात से है कि बालक और मनुष्य के देह, मस्तिष्क और भावना से श्रेष्ठ तत्वों को सामने लाया जाए।
- मैं बच्चों को शिक्षित करते हुए सबसे पहले उन्हें कोई उपयोगी हस्त कौशल सिखाऊँगा और उन्हें शुरू से ही कुछ रचने-पैदा करने के लिए तैयार करूँगा।
- बच्चे को प्रत्येक प्रक्रिया के क्यों और किस लिए का पता होना चाहिए।
- व्यक्ति अपनी मातृभाषा में शिक्षा को अधिक रूचि तथा सहजता के साथ ग्रहण कर सकता हैं।
- शिक्षा मानव के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है।

© JCERT not to be republished

1882 ई. में वुड्स घोषणापत्र की समीक्षा के लिये डब्लू.हण्टर की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया गया था, जिसमें आठ भारतीयों को शमिल किया गया। विश्वविद्यालयों की समस्याओं के अध्ययन के लिये डॉ. एम. सैडलर की अध्यक्षता में 'सैडलर आयोग' का गठन किया गया। इस आयोग में आशुतोष मुखर्जी एवं डॉ. जियाउद्दीन अहमद जैसे भारतीय शामिल थे।

स्थानीय पाठशालाओं पर अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव—

वुड्स डिस्पैच से पहले तक अंग्रेजों का ध्यान स्थानीय पाठशालाओं पर नहीं था। इन पाठशालाओं में बच्चों की जरूरतों के अनुसार शिक्षा दी जाती थी। इस समय शिक्षा का स्वरूप भी लचीला था, जैसे— फसल-कटाई के समय विद्यालय बंद रहता था। शिक्षा मौखिक ही दी जाती थी। लेकिन कम्पनी के शासन में निश्चित दिनचर्या, कठोर नियम और नियमित निरीक्षणों के जरिये पाठशालाओं को अपने अधीन करने का प्रयास किया गया। जिन पाठशालाओं ने कम्पनी की बात मानी उन्हें सरकारी सहायता प्राप्त हुई, शेष पाठशालाएँ कमजोर पड़ने लगी। गरीब किसान के बच्चे नये कठोर नियमों के कारण पढ़ाई छोड़ने को विवश हुए। अब स्थानीय पाठशालाओं का महत्व कम हो गया।

© JCERT not to be republished

स्व. मूल्यांकन—

(1) मध्यकालीन भारत में बच्चे प्राथमिक शिक्षा लेने कहाँ जाते थे ?

(2) एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल, कौन सी शोध पत्रिका निकालती थी ?

(3) भारत में 'अंग्रेजी शिक्षा का जनक' किसे कहा जाता है ?

(4) हण्टर आयोग का गठन कब हुआ था ?

(5) अंग्रेजों द्वारा, विद्यालयों में नियमों को कठोर किया गया। इससे गरीब बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—(1) पाठशाला और मदरसा, (2) एशियाटिक रिसर्च, (3) लार्ड मैकाले, (4) 1882 ई., (5) विद्यालय छोड़ दिये।

टैगोर का शांति निकेतन—

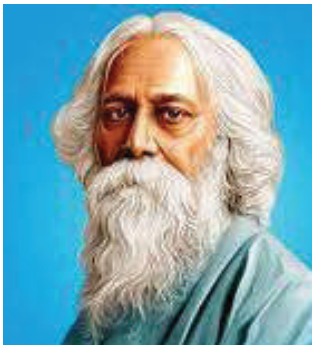

भारत के राष्ट्रगान के रचयिता रवीन्द्रनाथ टैगोर जी का बचपन में अपने विद्यालय जाने का मन नहीं करता थ। उन्हें स्कूल का माहौल दमनकारी लगता था। उनका मानना था कि ऐसे माहौल में बच्चों की सृजनशीलता तथा उनके चेहरे की मुस्कान समाप्त हो जाती है। इसीलिए वे प्राकृतिक परिवेश में बच्चों को शिक्षा देने के हिमायती थे। अपने विचारों को कार्यरूप देने के लिये टैगोर जी ने 1901 ई. में कलकत्ता से 100 कि.मी. दूर ग्रामीण परिवेश में शांति निकेतन की स्थापन की। यहाँ छात्र-छात्राओं

को खुले में वृक्ष के नीचे कला, संगीत, नृत्य के साथ-साथ प्रौद्योगिकी की भी शिक्षा दी जाती थी।

पश्चिमी शिक्षा से भारत को काफी नुकसान हुआ तो कुछ फायदे भी हुए। इसी के सम्पर्क में आकर हम भारतीय राष्ट्रवाद और समाजवाद जैसे आधुनिक मूल्य से परिचित हुए। पाश्चात्य शिक्षा से प्रेरणा लेकर समाज सुधारकों ने सती-प्रथा, कन्या भ्रूण हत्या, बाल-विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए कानून बनवाये।

स्वमूल्यांकन

मिलान कीजिए

अ		ब	
(क)	पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान के समर्थक	(i)	रोमन कैथोलिक मिशन
(ख)	वेदों की और लौटों	(ii)	1857 ई.
(ग)	शिक्षा द्वारा मानव का सर्वांगीण विकास	(iii)	महात्मा गाँधी
(घ)	वुड्स-डिसपैच	(iv)	राजा राम मोहन रॉय
(ड.)	संत जेवियर कॉलेज	(v)	दयानन्द सरस्वती

उत्तर—(क)— vi, (ख) —v, (ग) — iii, (घ) ii, (ड.) — i।

झारखण्ड की मिशनरीज शैक्षणिक संस्थान—

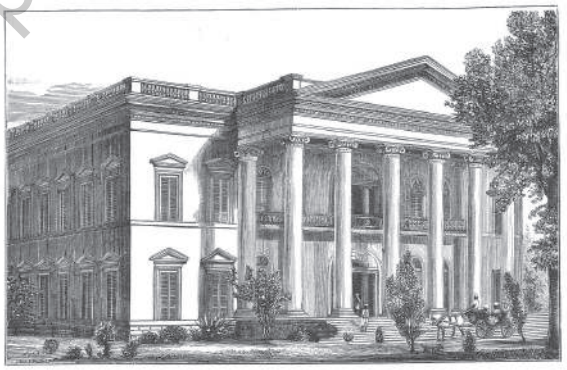

झारखण्ड क्षेत्र में इसाई मिशनरियों ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मिशनरी गरीब और लाचार बच्चों को अपने केन्द्र में ले जाकर शिक्षा प्रदान करते थे और इसके बदले उन्हें इसाई धर्म अपनाने के लिये प्रेरित करते थे। सर्वप्रथम गोस्नर इवेनजेलिकल लुथरेन चर्च मिशन 1845 ई. में राँची पहुँचा। इसी ने 1856 ई. में गोस्नर विद्यालय स्थापित की। एसपीजी मिशनरियों ने 1895 ई. में एक ब्लाइंड स्कूल स्थापित किया, जहाँ ब्रेल लिपि से पढ़ाई होती थी। इस मिशनरीज ने 1886 ई. में लड़कियों के लिये राँची में पंत मार्गेट बालिका उच्च विद्यालय तथा 1902 ई. में संत पॉल उच्च विद्यालय स्थापित किया। जीईएल चर्च द्वारा बेथेसदा महिला प्रशिक्षण स्कूल खोला गया। डबलिन मिशन द्वारा संत कोलम्बा नामक कॉलेज की स्थापना 1899 ई. में की गई। रोमन कैथोलिक मिशन द्वारा 1944 ई. में राँची में संत जेवियर कॉलेज की स्थापना की गई।

© JCERT not to be republished

स्मरणीय तथ्य

- प्राचीनकाल में भारत के तक्षशिला, नालन्दा और वल्लभी जैसे महत्वपूर्ण शिक्षा के केन्द्र थे।
- प्राच्यवादी, भारतीय ज्ञान, विज्ञान, भाषा तथा संस्कृति को महत्व देते थे।
- एच. टी. प्रिंसेप, विलियम जोन्स, हेनरी, टॉमस कॉलब्रुक, प्रमुख प्राच्यवादी थे।
- एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल की स्थापना विलियम जोन्स ने 1784 ई. में किया।
- वारेन हेस्टिंग्स ने 1781 ई. में कलकत्ता में एक मदरसा स्थापित किया।
- 1791 ई. में जोनाथन डंकन ने बनारस में हिन्दू कॉलेज की स्थापना की।
- आंग्लवादी - यूरोपीय ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा को महत्व देते थे, जबकि भारतीय ज्ञान, सभ्यता और संस्कृति को महत्वहीन मानते थे।
- मुनरो, एलफिन्स्टन मैकाले प्रमुख आंग्लवादी थे।
- 1813 के चार्टर एक्ट में एक लाख रूपये सलाना की धनराशि शिक्षा के विकास के लिए रखी गई।
- राँची जिला स्कूल की स्थापना 1839 ई. में की गई।
- बंगला में छपनेवाली पहली पुस्तक न्यू टेस्टामेंट थी।
- 1854 ई. में 'वुड डिस्पैच' आया जिसे भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 1855 ई. में लोक शिक्षा विभाग की स्थापना हुई तथा 1857 ई. में कलकत्ता बम्बई और मद्रास में विश्वविद्यालय खोले गये।
- 1882 वुड डिस्पैंच की समीक्षा हेतु हण्टर आयोग बना।
- लाला हसंराज ने सबसे पहले 1886 ई. में लाहौर में दयानन्द एंग्लो-वैदिक (DAV) की स्थापना किये की।
- पाश्चात्य शिक्षा के आलोचक गाँधी जी ने 1937 ई. में वर्धा योजना तैयार की।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर ने 1901 ई. में शांति निकेतन की स्थापना की।
- 1895 ई. में एसपीजी मिशनरीज द्वारा स्थापित ब्लाइंड स्कूल में ब्रेल लिपि द्वारा पढ़ाई होती थी।
- थॉमस बैबिंगटन मैकाले ने बनारस के संस्कृत कॉलेज तथा कलकत्ता मदरसे जैसे प्राच्यवादी संस्थानों को अंधकार के मंदिर की संज्ञा दी है।

© JCERT not to be republished

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(1) निम्नांकित में से कौन प्राच्यवादी नहीं थे ?

(क) विलियम जोन्स (ख) टॉमस कोलब्रुक (ग) एच.टी. प्रिंसेप (घ) मैकाले

(2) 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल की स्थापना कब हुई ?

(क) 1684 (ख) 1784 (ग) 1748 (घ) 1648

(3) वाटेन हेस्टिंग्स ने कलकत्ता में एक मदरसे का निर्माण कब दिया ?

(क) 1781 (ख) 1791 (ग) 1871 (घ) 1784

(4) 1791 ई. में स्थापित – बनारस के हिन्दू कॉलेज का निर्माण किसने करवाया ?

(क) विलियम जोन्स (ख) मैकाले (ग) वाटेन हेस्टिंग्स (घ) जोनाथन डंकन

(5) भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा किसे कहा जाता है ?

(क) वुडस डिस्पैच (ख) वर्धा योजना

(ग) हण्टर आयोग की रिपोर्ट (घ) इनमें से नहीं

(6) इनमें से कौन पाश्चात्य शिक्षा को भारत के आधुनिकीकरण का द्वार मानते थे ?

(क) महात्मा गाँधी (ख) रवीन्द्र नाथ टैगोर (ग) राजा राम मोहन राय (घ) दयानन्द सरस्वती

(7) किस योजना का मूलभूत सिद्धान्त हस्त उत्पादक कार्य था ?

(क) वर्धा योजना (ख) टैगोर का शांति निकेतन

(ख) वुड घोषणापत्र (घ) हण्टर रिपोर्ट

(8) झारखण्ड में सर्वप्रथम कौन सा मिशनरीज पहुँचे ?

(क) एसपीजी (ख) गोस्नर इवेनजेलिकल लुलरेन चर्च

(ग) जी ई एल (घ) रोमन कैथोलिक

(9) 1944 ई. में स्थापित राँची का संत जेवियर कॉलेज कौन मिशनरीज द्वारा बनवाया गया ?

(क) रोमन कैथोलिक (ख) डबलिन

(ग) एस पी.जी (घ) गोस्नर इवेन जेलिकल लुथरेन चर्च

उत्तर—(1) घ, (2) ख, (3) क, (4) घ, (5) क, (6) ग, (7) क, (8) ख, (9) क।

© JCERT not to be republished

सही के सामने सही और गलत के सामने गलत का निशान लगावें।

(1) प्राचीन काल में भारत ज्ञान-विज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र में काफी आगे था। [✔]

(2) लार्ड मैकाले प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान और साहित्य के समर्थक थे। [×]

(3) वुड्स डिस्पैच को भारतीय शिक्षा का मैग्नाकार्टा कहा जाता है। [✔]

(4) महात्मा गाँधी तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर पश्चिमी शिक्षा-पद्धति के पुरजोर विरोधी थे। [✔]

(5) रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांति-निकेतन में बंद कमरों में शिक्षा दी जाती थी। [×]

(6) झारखण्ड में एसपीजी मिशनरी द्वारा 1886 ई. में लड़कियों के लिये राँची में संत मार्गेट उच्च विद्यालय की स्थापना की गयी। [✔]

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) प्राचीन भारतीय साहित्य के प्रति प्राच्यवादियों का क्या विचार था ?

(2) वुड्स घोषणापत्र को भारतीय शिक्षा का मैगनाकार्टा क्यों कहा जाता है ?

(3) राजा राममोहन राय पाश्चात्य ज्ञान के समर्थक क्यों थे ?

(4) टैगोर द्वारा स्थापित शांति निकेतन की क्या विशेषताएँ थीं ?

(5) झारखण्ड क्षेत्र में मिशनरियों ने शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण क्यों किया ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) प्राच्यवादी और आंग्लवाद में अंतर स्पष्ट करें।

(2) अंग्रेजों के काल में गरीब किसान के बच्चे पढ़ाई क्यों छोड़ने लगे ?

(3) महात्मा गाँधी ने पाश्चात्य शिक्षा का विरोध क्यों किया ?

प्रोजेक्ट कार्य

अपने पंचायत में बड़े-बुजुर्गो से मिलकर पता करें कि पहले लोग कैसे शिक्षा प्राप्त करते थे।

© JCERT not to be republished